भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली और
गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

परंपरागत भारतीय कला एवं संस्कृति के संरक्षण में स्त्रियों की भूमिका

25-26 अप्रैल 2024

मुख्य संरक्षक

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल
माननीय कुलपति
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

संरक्षक

प्रो. मनीष श्रीवास्तव
कुलसचिव (कार्यवाहक)
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

सह-संरक्षक

प्रो. अनुपमा सक्सेना
प्रोफ़ेसर, राजनीति शास्त्र विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

परामर्श समिति

प्रो. ब्रजेश तिवारी
प्रो. एल.वी.के.एस. भास्कर
प्रो. भारती अहिरवार

संयोजक

डॉ. गौरी त्रिपाठी
सह-आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

आयोजन सचिव

डॉ. रमेश कुमार गोहे
डॉ. मुरली मनोहर सिंह

आयोजन समिति

डॉ. राजकुमार नागवंशी, डॉ. धीरज शुक्ला
डॉ. सुबल दास, डॉ. आशुतोष सिंह
डॉ. ज्योति वर्मा, डॉ. राजेश मिश्र
डॉ. अखिलेश गुप्ता, डॉ. अमित गुप्ता
डॉ. अनीश कुमार, डॉ. अतुल कुमार

आयोजक

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
कोनी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

मान्यवर,

स्त्रियां कला की बारीकियों को अपेक्षाकृत बेहतर तरीके से रेखांकित करती हैं। स्त्रियों की कला और संस्कृति के संरक्षण में बड़ी भूमिकाएं हैं। हमारा इतिहास, साहित्य मूल्य परंपराओं में स्त्रियां जितनी भागीदारी के साथ अपनी भूमिकाओं को तय करती हैं वह एक बड़ी बात है। स्त्रियों की यह पूरी श्रृंखला कई माध्यमों से हमारी विरासत को सुरक्षित कर रही हैं। कोई भी समाज या देश-काल के बगैर तो संपूर्ण हो ही नहीं सकता एक सामूहिक दृष्टिकोण, मूल्य और परंपराएं हमारे जीवन चरित्र को भी दिखाती हैं। देश के आर्थिक सामाजिक और अन्य गतिविधियों में संस्कृति एवं मूल्यों का समावेश होता है। हमारा भारत देश अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण विभिन्न संस्कृतियों के कारण, विविध विशेषताओं का देश माना जाता है। हम भारत की आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं और एक ऐसे समय को देख रहे हैं जब भारत की एक नई विकास गाथा लिखी जा रही है, परम्परागत कलाओं व संस्कृतियों के संरक्षण में महिलाओं के योगदान का पता लगाना, निर्धारित करना और पहचानना महत्वपूर्ण है।

संगोष्ठी का उद्देश्य

- कला एवं संस्कृति के माध्यम से स्त्रियों की आर्थिक व राजनीतिक स्थिति को जानना।
- सामाजिक बदलाओं में परम्परागत कला एवं संस्कृति की भूमिका को दृष्टिगत करना।
- आज के समय में विभिन्न स्त्रियों द्वारा भित्ति चित्र व अन्य माध्यमों से कला के संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में स्त्रियों के संघर्षों को रेखांकित किया जाना।
- महिला सशक्तीकरण में परम्परागत कलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
- परम्परागत कला के माध्यम से स्त्रियों में नवाचार की भूमिका का रेखांकन।
- भारतीय ज्ञान परम्परा, परम्परागत कला व संस्कृति के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना।
- परम्परागत कला एवं संस्कृति के संरक्षण में कार्य कर रहीं विभिन्न स्त्रियों की भूमिका के योगदान पर बातचीत करना और उनके योगदान का दस्तावेजीकरण करना।
- परम्परागत कला और संस्कृति को तकनीक और कौशल से जोड़ना।

संगोष्ठी के उप-विषय (मुख्य विषय से संबन्धित अन्य उपविषय भी बनाए जा सकते हैं)

- भारतीय कला एवं संस्कृति में स्त्रियों की भूमिका।
- परम्परागत कला और संस्कृति का तकनीक और कौशल के साथ अंतर्संबंध।
- परम्परागत कला के विकास में गुमनाम स्त्रियों की भूमिका का रेखांकन।
- परम्परागत कला के विकास में आदिवासी स्त्रियों की भूमिका।
- परम्परागत संस्कृति के विकास में आदिवासी स्त्रियों की भूमिका।
- लोक से जुड़ी हुई चित्रकारी कला का अध्ययन।
- परम्परागत कला और संस्कृति और नवाचार।
- परम्परागत कला और संस्कृति के विकास में विश्वविद्यालयों की भूमिका।
- भारतीय ज्ञान परम्परा और परम्परागत कला और संस्कृति।
- परम्परागत कला, संस्कृति और स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व शैक्षिक स्थिति।

शोध-पत्र संबंधी निर्देश

शोध-पत्र हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में स्वीकार किए जाएंगे। चयनित शोध-पत्रों की पूर्व-समीक्षा के पश्चात ISBN के साथ पुस्तक का प्रकाशन भी किया जाएगा। शोध-पत्र की शब्द सीमा 2000 से 3000 तक होनी चाहिए। शोध-सारांश 200 शब्द तक होने चाहिए। शोध-पत्र यूनिकोड फॉन्ट (हिंदी) तथा Times Roman (अंग्रेजी) में ही भेजें। शोध-पत्र में 'शोध-सारांश, बीज-शब्द, प्रस्तावना, मुख्य विषय का विश्लेषण, प्राप्त आंकड़े, निष्कर्ष, संदर्भ-सूची' अवश्य होने चाहिए। शोध-पत्र Word File और PDF File में ई-मेल hodhindiggv@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

- शोध-सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 15 अप्रैल 2024
- पूर्ण शोध-पत्र भेजने की अंतिम तिथि : 20 अप्रैल 2024

पंजीकरण

ऑनलाइन गूगल फॉर्म के माध्यम से पंजीकरण किया जा सकता है। संयुक्त शोध-पत्र में दो अलग-अलग पंजीयन शुल्क देना होगा। पंजीयन शुल्क विश्वविद्यालय के खाते में ऑनलाइन जमा कर सकते हैं। पेमेंट के पश्चात रसीद की कॉपी गूगल फॉर्म के साथ अवश्य संलग्न करें। पंजीकरण हेतु लिंक -

https://docs.google.com/forms/d/180uvYou0ms9RjDendyVOYR0NWMEorUXzt9OVHfStcro/edit

खाते का विवरण : **37137162271**, IFSC Code : **SBIN0018879**

बैंक का नाम : **SBI**, शाखा का नाम : **LODHIPARA KONI**

पंजीयन शुल्क

प्राध्यापकों के लिए : 800 रुपये
शोधार्थियों के लिए : 500 रुपये
विद्यार्थियों के लिए : 200 रुपये

विश्वविद्यालय का परिचय

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, भारत का एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर के छत्तीसगढ़ राज्य में केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009, क्रमांक 25 के तहत स्थापित है। औपचारिक रूप से गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, राज्य विधानसभा के अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था और 16 जून, 1983 को उद्घाटन हुआ था। सामाजिक और आर्थिक रूप से चुनौती वाले क्षेत्र में स्थित इस विश्वविद्यालय का नामकरण छत्तीसगढ़ के महान संत गुरु घासीदास (जन्म 17 वीं सदी में) के सम्मान स्वरूप दिया गया। जिन्होने वंचित समुदायों, सभी सामाजिक बुराइयों और समाज में प्रचलित अन्याय के खिलाफ एक अनवरत संघर्ष छेड़ा।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् का परिचय

इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (ICSSR) की स्थापना 1969 में भारत सरकार द्वारा देश में सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। ICSSR परियोजनाओं, फैलोशिप, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, क्षमता निर्माण, सर्वेक्षण, प्रकाशन आदि भारत में सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए अनुदान प्रदान करता है। ICSSR नेशनल सोशल साइंस डॉक्यूमेंटेशन सेंटर (एनएएसएसडीओसी) - सामाजिक विज्ञान में शोधकर्ताओं को पुस्तकालय और सूचना सहायता सेवाएं प्रदान करता है। ICSSR डाटा सेवा भारत में सोशल साइंस कम्युनिटी के बीच डेटा साझा करने और पुन: उपयोग के माध्यम से शक्तिशाली शोध पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय डेटा सेवा के रूप में कार्य करने के लिए विकसित हुआ है।

आवास एवं आवागमन व्यवस्था

अरपा नदी के किनारे बसा बिलासपुर शहर छत्तीसगढ़ का ऐतिहासिक शहर है। यहाँ पर शहर के बीच दो रेलवे स्टेशन बिलासपुर जंक्शन और उसलापुर जंक्शन स्थित हैं, जहां से देशभर में आने-जाने के लिए ट्रेन की उपलब्धता बनी रहती है। शहर से 10 किलोमीटर की दूरी पर बिलासा देवी केंवटीन विमानतल, चकरभाठा में स्थित है। इसी के साथ रायपुर में विवेकानंद विमान तल, माना में स्थित है। रेलवे स्टेशन से विश्वविद्यालय तक आने के लिए प्रीपेड टेक्सी और अन्य साधन हमेशा उपलब्ध रहते हैं। पंजीकृत प्रतिभागियों के लिए संगोष्ठी के दिन जलपान व भोजन की व्यवस्था उपलब्ध रहेगी। यात्रा भत्ता और आवास भत्ता की व्यवस्था प्रतिभागियों को स्वयं करनी होगी।

पंजीकरण हेतु संपर्क

डॉ. गौरी त्रिपाठी : 9452206059 डॉ. रमेश कुमार गोहे : 7999260291
डॉ. मुरली मनोहर सिंह : 8319781773 डॉ. अनुपमा कुमारी : 8888209343
डॉ. अखिलेश गुप्ता : 8085913848 डॉ. अनीश कुमार : 9198955188
डॉ. अतुल कुमार : 8683989791